B.Com Part – II Semester MJC

Business organisation and managment (1)

classmate
Date
Page

Q — कार्यानुसार मजदूरी भुगतान प्रणाली से आप क्या समझते हैं। इसके गुण-दोषों की विवेचना करें। (लाभ-हानि)

Ans — समयानुसार मजदूरी प्रणाली के दोषों के निवारण हेतु कार्यानुसार मजदूरी भुगतान पद्धति का विकास हुआ। इस पद्धति में श्रमिकों की मजदूरी उत्पादन के परिमाण एवं गुण से सम्बन्धित होती है समय से नहीं। जो श्रमिक जितना और जैसा कार्य करता है, उसी आधार पर उनको मजदूरी दी जाती है। अतः जो श्रमिक जितना अधिक कार्य करेगा, उसको उतनी ही अधिक मजदूरी दी जायेगी। इस प्रकार इस पद्धति में श्रम को अधिक महत्व दिया जाता है।

कार्यानुसार मजदूरी भुगतान प्रणाली के लाभ — Merits of Piece Rate Wage Method — इस प्रणाली के निम्नलिखित लाभ हैं —

(1) श्रमिकों को प्रोत्साहन — Incentive to workers — श्रमिकों को इस प्रणाली से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि इसमें मजदूरी का वितरण न्यायपूर्ण होता है। श्रमिक जानते हैं कि अधिक कार्य करने से अधिक मजदूरी मिलेगी। अतः वे अपनी इच्छा से अधिक काम करने की कोशिश करते हैं।

(2) उत्पादन में वृद्धि — Increase in Production — इस प्रणाली में श्रमिक अधिक मजदूरी पाने की लालसा में समय को बिल्कुल भी नष्ट नहीं करते बल्कि अधिक से अधिक कार्य करते हैं जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि होती है।

(3) प्रति इकाई उत्पादन व्यय में कमी — Reduction in Per Unit Cost Production — उत्पादन मात्रा में वृद्धि होने के कारण प्रति

इकाई उत्पादन व्यय में कमी आ जाती है क्योंकि उपरिव्यय प्रायः निश्चित रहते हैं। परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को सस्ती दर पर वस्तुएं मिल जाती है।

(4) श्रम तथा पूंजी में मधुर सम्बन्ध — Cordial Relation between Labour and Capital — श्रमिकों को उनकी कार्यक्षमता की योग्यता के अनुसार एवं उत्पादकता के आधार पर मजदूरी मिलने के कारण श्रम एवं पूंजी में मधुर सम्बन्ध रहते हैं।

(5) उत्पादन विधियों तथा क्रियाओं में सुधार — Improvement in Production Techniques — इस प्रणाली से न केवल उत्पादन की मात्रा में वृद्धि होती है। बल्कि उत्पादन विधियों व क्रियाओं में भी सुधार देखने को मिलते हैं। दोष रहित उत्पादन के लिए श्रमिक अच्छा कच्चा माल व नवीनतम मशीन एवं यंत्र की मांग करता है। मजदूरी की प्रेरणा उसको सर्वश्रेष्ठ उत्पादन विधि से कार्य करने के लिये प्रेरित करता है। इस प्रकार उत्पादन क्रियाओं में सुधार हो जाता है।

(6) गतिशीलता में वृद्धि — Increase in Labour Mobility — कार्य को निरंतर करते रहने के कारण श्रमिक अपने कार्य में कुशल हो जाते हैं जिससे उनको एक उद्योग से दूसरे समान उद्योग में कार्य सुगमता से मिल जाता है।

(7) श्रमिकों का सर्वांगीण विकास — All Round Development to Labour — श्रमिक अधिक कार्य करके अधिक मजदूरी कमाते हैं जिससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ती है। क्रय शक्ति बढ़ने से उपभोग का स्तर उठता है जिससे उनके जीवन स्तर भी ऊँचा हो जाता है। उनकी कार्यकुशलता गतिशीलता बढ़ती है।

(8) उत्साहपूर्ण वातावरण — Encouraging Atmosphere — उत्पादन कार्य का मिलने वाले प्रतिफल से सीधा संबंध

होने के कारण श्रमिक अधिक लगन तथा परिश्रम से कार्य करता है जिससे उसको अधिक मजदूरी मिलती है। इस प्रकार वह पूर्ण आश्वस्त रहता है कि उसको उसके परिश्रम का उचित पुरस्कार मिल रहा है। इससे श्रमिकों में उच्च मनोबल एवं उत्साह बना रहता है।

कार्यानुसार मजदूरी भुगतान प्रणाली की हानियाँ — Demerits of Piece Rate Wage method — इस प्रणाली की निम्नलिखित हानियाँ हैं —

(1) उत्पादन की किस्म में गिरावट — Decrease in Quality of Production — इस प्रणाली में श्रमिक अधिक से अधिक मजदूरी प्राप्त करने के लिए उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं जिससे वे वस्तु का प्रमाप निरंतर गिरता चला जाता है।

(2) मशीन तथा यंत्रों का दुरुपयोग — Improper Use of Machines and Tools — अधिक उत्पादन के उद्देश्य से श्रमिक व यंत्रों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते। मशीनों तथा अन्य संयंत्रों का दुरुपयोग करते हैं जिससे वे शीघ्र टूटते हैं तथा जल्दी घिसने लगते हैं जिससे उनके मरम्मत व्यय बढ़ जाता है।

(3) श्रम संघों द्वारा विरोध — Opposition of Labour Union — श्रम संघ इस मजदूरी भुगतान पद्धति का विरोध करते हैं क्योंकि यह प्रणाली श्रमिकों की एकता भंग करती है और उनमें स्वार्थ एवं ईर्ष्या की भावना को जन्म देती है।

(4) स्वास्थ्य पर कुप्रभाव एवं राष्ट्रीय हानि — Effect on Health and National loss — अधिक मजदूरी प्राप्त करने के उद्देश्य से श्रमिक अधिक से अधिक समय तक श्रमिक कार्य करते हैं

classmate
Date
Page

इससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, स्वास्थ्य की खराबी व बीमारी उनकी कुशलता को कम करने लगती है। कुशलता की कमी से श्रमिकों को, उत्पादकता को, उद्योग को, उपभोक्ता को तथा सम्पूर्ण राष्ट्र को हानि होती है।

5- कार्यालय सम्बन्धी व्ययों में वृद्धि — Increase in Office expenses — श्रमिकों को दी जानेवाली मजदूरी की राशि की नहीं-नहीं गणना एवं भुगतान करने के लिए उत्पादित वस्तुओं का सही-सही विवरण रखना पड़ता है जिसे ज्ञात करने में अधिक समय लगता है। अतः कार्यालय लिपिकों की आवश्यकता तथा व्यय बढ़ जाता है।

6- श्रमिकों की आय में असमानता — भिन्न-भिन्न श्रमिकों को भिन्न-भिन्न मजदूरी मिलने के कारण उनमें आपसी ईर्ष्या, वैमनस्यता तथा असंतोष पैदा हो जाता है जिससे उनका मनोबल एवं एकता गिरती है।

7- श्रम-श्रेणी विभाजन से हानि — श्रमिकों की कार्यक्षमता के अनुसार मजदूरी देने के लिए उनकी अलग श्रेणी बना दी जाती है जिससे उनमें गुटबाजी तथा फिर अपने दूसरे साथियों की मांग की अपेक्षा करने की भावना उत्पन्न हो जाती है।

8- काम रुक जाने से हानि — यंत्र आदि के टूट जाने, बिजली के फेल हो जाने से श्रमिक उत्पादन नहीं कर पाता है जिससे उतने समय की मजदूरी उसके बिना मिले और उसको नहीं मिल पाती है जो उसके लिए नुकसान है।

× —— × —— ×

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt. of Commerce
Sher Shah College.
SASARAM